मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता । दुनियाँ के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है । दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 32 फरवरी 1991 50 पैसे

पूंजीवादी युद्ध और मजदूर

अमीरों की लड़ाई गरीब क्यों लड़ें !—अमरीका में युद्ध—विरोधी जलूस में नारा।

गोलाबारी हो रही है, लोग मर रहे हैं। एक किस्म का पूंजीवादी प्रचार इसे कुवैत की मुक्ति के लिए युद्ध बताता है तो दूसरे किस्म का पूंजीवादी प्रचार इसे फिलिस्तीन की मुक्ति के लिये लड़ाई घोषित करता है, एक इसे देशों की स्वतन्त्रता के लिए जंग बताता है तो दूसरा इसे शैतानों के खिलाफ मुसलमानों की जेहाद घोषित करता है। और फिर, साम्राज्यवाद-विरोध आदि वाले छुटभैये पूंजीवादी तत्वों की ढपलियों के पूंजीवादी आरकेस्ट्रा में अपने अलग ही राग हैं ....

पूंजीवादी गिरोहों के बीच वाला यह युद्ध वास्तव में पूंजीवादी व्यवस्था के संकट, अनिवार्य तौर पर गहराते संकट का परिणाम है। यहां हम पूंजीवादी संकटों के कारणों पर विचार करने की बजाय इनके कुछ पहलुओं तक ही अपने को सीमित रखेंगे। आइये हमारी जिन्दगी और मौत से जुड़े कुछ मुद्दों पर गौर करें :

—रोटी-कपड़ा-मकान-बेहतर जीवन की बढ़ती मांग के जवाब में साधनों का तोपों के निर्माण के लिए अधिकाधिक इस्तेमाल अजूबा है पर सौ साल से इसे हम दुनियां-भर में बढ़ती रफ्तार से होता देख रहे हैं। जाहिर है कि यह किसी व्यक्ति या इलाके की सनक की वजह से नहीं है। खाड़ी क्षेत्र में छिड़ा युद्ध पूंजीवादी युद्धों के सिलसिले का एक हिस्सा मात्र है। हमें साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि आने वाले दिनों में इस प्रकार की मार-काट दुनिया-भर में बढ़ेगी। याद रखिये कि 6—7 महीने पहले भारत सरकार और पाकिस्तान सरकार ने इस इलाके में लड़ाई का माहौल बना डाला था। जाहिर है कि वियतनाम हो चाहे जर्मनी, भारत हो चाहे श्रीलंका, पूंजीवाद के बने रहने का मतलब दुनियां-भर के मजदूरों के लिए मौत है।

—आज दुनिया के हर क्षेत्र की एक-दूसरे पर निर्भरता इस प्रकार की है कि एक इलाके की घटनाओं का असर बाकी इलाकों पर भी पड़ता है। देखिये, खाड़ी युद्ध की कीमत पूंजी के नुमाइन्दों ने यहां के मजदूरों से वसूलनी भी शुरू कर दी है। भारत सरकार ने तो आने वाले दिनों में मजदूरों का और खून पसीना निचोड़ने का ऐलान भी कर दिया है। जाहिर है कि इराक के मजदूर हों चाहे अमरीका के, भारत के मजदूर हों चाहे पाकिस्तान के, पूंजीवाद के बने रहने का मतलब दुनिया-भर के मजदूरों के लिये बढ़ती बदहाली है।

—अमरीका सरकार व उसकी सहयोगी सरकारों और इराक सरकार के बीच युद्ध को पूंजीवादी विचारों के असर की वजह से अमरीका व उसके मित्र देशों और इराक के बीच युद्ध मान लिया जाता है। इस प्रकार लड़ाई अमरीकियों और इराकियों के बीच पेश की जाती है व मान ली जाती है। यह ठीक वैसे ही है जैसे कि 1965 व 1971 में पाकिस्तान सरकार और भारत सरकार के बीच युद्धों को भारत और पाकिस्तान के बीच युद्धों, भारतीयों और पाकिस्तानियों के बीच लड़ाइयों के तौर पर पेश किया गया व मान लिया गया। दरअसल यह एक बहुत ही घातक पूंजीवादी धोखा-धड़ी है। पूंजीवादी गिरोहों के बीच युद्ध को देशों के बीच युद्ध और देशों को वहां के बाशिन्दों के तौर पर पेश किया जाता है। वास्तविकता इसके बिल्कुल उलट है। आज हर देश में पूंजीपति वर्ग, मजदूर वर्ग आदि हैं। देश का मतलब फौज से लैस और इलाके पर काबिज विश्व पूंजी का एक धड़ा है। देश हित का मतलब इस प्रकार के पूंजी के एक धड़े के नुमाइन्दों का हित है। अमरीका में मजदूरों का दमन-शोषण अमरीका में पूंजी के नुमाइन्दे और उनकी प्रतिनिधि, अमरीका सरकार करती है। इराक में मजदूरों का दमन-शोषण इराक में पूंजी के नुमाइन्दे और उनकी प्रतिनिधि

(शेष अगले पेज पर)

प्याली फैक्ट्री

63-64 इन्डस्ट्रियल एरिया स्थित हितकारी पोटरीज भारत में चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने वाली प्रमुख फैक्ट्री है। इसमें 1200 परमानेन्ट और 500 कैजुअल व ठेकेदारों के मजदूर काम करते हैं।—इनमें 750 महिला मजदूर हैं जिनमें से 600 परमानेन्ट हैं। 1978-79 में प्याली फैक्ट्री में एक उल्लेखनीय मजदूर संघर्ष हुआ था जिसमें महिला मजदूरों ने आगे बढ़ कर भाग लिया था। मैनेजमेंट ने गुन्डों की मदद से उस संघर्ष को कुचल दिया था और 500 मजदूरों को नौकरी से निकाल कर वह मजदूरों को झुकाने में कामयाब हुई थी।

1978-79 के संघर्ष को कुचलने के बाद से हितकारी पोटरीज मैनेजमेंट ने फैक्ट्री में हिटलरशाही थोप रखी है। बोलने पर मजदूरों को सजा के तौर पर गर्मियों में धूप में खड़े कर देना इसकी एक मिसाल है। मजदूरों को दबाये रखने के लिए मैनेजमेंट द्वारा भर्ती तीस गुन्डे फैक्ट्री में चक्कर लगाते हैं, वे प्रोडक्शन का कोई काम नहीं करते। इस फैक्ट्री में बाकी हालात यह है कि मशीन शॉप के तीस—बत्तीस मजदूरों को छोड़कर बीस-बाईस साल तक से काम कर रहे बाकी सब मजदूरों को हैल्पर का ग्रेड ही दिया जाता है। महंगाई वाले सरकारी आंकड़े भी मैनेजमेंट लागू नहीं करती। महिला मजदूरों के साथ गाली-गलौच करना मैनेजमेंट की आम बात है तथा उन्हें कोई सुविधाएं नहीं दी जाती—बच्चा होने पर महिला को छुट्टी तक नहीं दी जाती तथा उस समय की अनुपस्थिति के लिए उनका वेतन काट लिया जाता है।

इस सब के खिलाफ मार्च 90 में प्याली फक्ट्री मजदूरों में हलचल आरम्भ हुई और मजदूरों ने सगठित होने के प्रयास शुरू किये। होली पर खेल-कूद में दिए जा रहे इनाम लेने से मजदूरों ने इन्कार कर दिया और दिवाली पर मिठाई आदि के सवाल पर मजदूरों ने फिर सामूहिक विरोध का प्रदर्शन किया। मैनेजमेंट ने मजदूरों के असन्तोष को दबाने के लिये नवम्बर 90 में तीन मजदूर सस्पैन्ड कर दिये। पर मजदूरों में हलचल बढ़ती गई और सात जनवरी को बेहद परेशान करने वाले फैक्ट्री मैनेजर की मजदूरों ने फैक्ट्री में ही धुनाई कर दी। इस पर मैनेजमेन्ट ने पुलिस में शिकायत दर्ज करवाई कि बाहर के गुन्डों ने मैनेजर को पीटा है। पर मैनेजमेन्ट ने इतना ही नहीं किया। मैनेजमेन्ट ने सात जनवरी को ही मजदूरों पर डकैती का केस बनवाया—मजदूरों पर वेतन वाला कैश लूट लेने का आरोप लगाया। अपने झूठे केस को दमदार बनाने के लिये मैनेजमेन्ट ने सात जनवरी को रात आठ बजे के करीब फैक्ट्री गेट पर नोटों की गड्डियाँ बिखेर कर फोटो खिचवाये। और इस बहाने मैनेजमेन्ट ने पुलिस को बुलाकर फैक्ट्री में ड्यूटी पर से मजदूरों को गिरफ्तार करवाने का सिलसिला शुरू कर दिया है। मजदूरों को और डराने के लिये मैनेजमेन्ट ने जनवरी में पांच और मजदूरों को सस्पैन्ड कर दिया है। ऊपर से मैनेजमेन्ट के गुन्डों ने फैक्ट्री में अपनी हलचल बढ़ा दी है।

मैनेजमेन्ट के खिलाफ एकता बना कर ही मजदूर अपने हितों की देखभाल कर सकते है लेकिन यह एकता अन्धी एकता नहीं बल्कि सचेत एकता होनी चाहिए। प्याली फैक्ट्री के मजदूरों को होशियार रहने की जरूरत है क्योंकि उनके गुस्से को भुनाने के लिए बिचौलिए सक्रिय हैं। एक चौकसी मजदूर यह बरत सकते है कि फैसले का अधिकार सब मजदूरों की आम सभा के हाथों में ही रखें—किसी एक या पाँच पर भरोसा करके हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना मजदूरों की बरबादी की राह है। बिचौलियों पर तीस मार खाओं पर भरोसा करके फरीदाबाद की फैक्ट्रियों में जगह-जगह मजदूरों ने ठोकर खाई हैं। मजदूरों का कोई मसीहा नहीं हो सकता, सब मजदूरों द्वारा अपने हित में कदम उठाने जरूरी हैं।

—o—

हमारे लक्ष्य हैं:— 1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिये इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुंचाने के प्रयास करना। 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनियां के मजदूरों की एकता के लिये काम करना और इसके लिये आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बटाना। 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी सगठन बनाने के लिये काम करना। 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिये काम करना।

समझ, सगठन और सघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को ताल-मेल के लिये हमारा खुला निमन्त्रण है। बातचीत के लिये बेझिझक मिलें। टीका टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे।

संपर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, एन. आई. टी. फरीदाबाद 121001

मार्क्सवाद

(सातवीं किस्त)

पिछले कुछ अंकों में सम्भव होने, आवश्यक होने और वास्तव में होने पर चर्चा द्वारा हमने यह स्पष्ट करने की कोशिश की है कि होना ही था अथवा होगा ही वाली धारणा का समाज की मार्क्सवादी भौतिकवादी व्याख्या से कोई रिश्ता नहीं है। मार्क्सवाद का नकाब लगाये राज्य-पूंजीवादी धाराओं/नकली कम्युनिस्टों द्वारा मार्क्सवाद को विकृत करके उसे नियतिवाद के तौर पर प्रचारित एक धारणा के व्यापक असर को देखते हुए यह करना आवश्यक था। इस अंक से हम मानव समाज के इतिहास में से उस एक धागे को लेंगे जो कि वर्तमान के सन्दर्भ में हमारे लिये सर्वोपरि महत्व का है। विगत के सामाजिक सगठनों और उनमें हुए परिवर्तनों पर इस चर्चा द्वारा हम यह दिखाने की कोशिश करेंगे कि पूंजीवाद के क्रान्तिकारी उन्मूलन के लिये उसे समझने के वास्ते उसकी भौतिकवादी व्याख्या एक सक्षम औजार है।

जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की जब तक तंगी रहती है तब तक इन भौतिक जरूरतों की प्राप्ति की प्रक्रिया सामाजिक जीवन को अन्ततः निर्धारित करती है। और तंगी वाले सामाजिक सगठनों में गुणात्मक तौर पर भिन्न दो स्वरूप हैं—वर्ग-विहीन समाज तथा वर्ग-समाज। वर्ग-विहीन समाज में जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव का संघर्ष मुख्यतः प्रकृति के साथ होता है। बटे हुए समाज, वर्ग-समाज, में रोटी और सुरक्षा के लिये मानव का प्रकृति के साथ संघर्ष गौण हो जाता है तथा मानव-मानव के बीच संघर्ष, शोषकों और शोषितों के बीच संघर्ष प्रमुख बन जाता है। आइये मानव समाज के प्रारम्भिक गठन, जो कि वर्ग-विहीन सामाजिक सगठन था, इससे चर्चा आरम्भ करें।

पशु जगत से अलग हो कर मानवों का रूप ग्रहण करने वाले हमारे प्रारम्भिक पुरखे भूमध्य रेखा के इर्द—गिर्द के गरम बरसाती जंगलों में रहते थे। कन्द-मूल पर गुजर-बसर करने वाले हमारे वे पुरखे झुन्डों में पेड़ों पर रहते थे। मां के इर्द-गिर्द गठित उन सामाजिक संगठनों में आरम्भ में 18-20 की औसत आयु वाले 15-20 सदस्य होते थे। रोटी और सुरक्षा के लिए उन्हें प्रकृति से सतत संघर्ष करना पड़ता था। शिशु जहाँ रोटी और सुरक्षा के लिये माँ पर निर्भर थे वहीं समुदाय के प्रत्येक सदस्य का जीवन समूह में बने रहने पर ही कुछ हद तक सुरक्षित था—हिंसक जंगली जानवरों से भरे जंगलों में किसी के समूह से बिछड़ जाने—अलग हो जाने का मतलब मौत था। उस दौर में रोटी और सुरक्षा के लिए प्रकृति से अति कठिन परिस्थितियों में जूझते मानव समूह में भुखमरी की हालत में भी इसलिये बराबरी और सहोदर भाव का बोल बाला था। उन्हें इस वजह से आदिम साम्यवादी समाज कहा जाता है। उनमें सामाजिक जीवन में नारी की प्रमुख भूमिका की वजह से उन्हें मातृ-सत्ता वाले समाज भी कहा जाता है पर "सत्ता" शब्द का प्रयोग सही नहीं है—इसे बराबरी वालों में प्रमुख के अर्थ में ही लेना चाहिए। इस प्रकार रोटी और सुरक्षा के लिए उस समय साम्यवादी समूह में रहना निर्णायक महत्व का था। जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की प्राप्ति की प्रक्रिया सामाजिक जीवन को अन्ततः निर्धारित करती थी।

रोटी और सुरक्षा के लिए प्रकृति से जूझते हुये नारी-प्रधान उस सामाजिक संगठन ने चहुमुखी प्रगति की। आग की जानकारी व उस पर नियन्त्रण तथा सुरक्षा व भोजन प्राप्ति के लिए विकसित हथियारों-औजारों ने कन्द-मूल के साथ-साथ मांस—मछली को हमारे पुरखों के लिए भोज्य बनाया। शिकार के विकास के साथ वे जगल की कैद से मुक्त हो कर पृथ्वी पर फैल गए। अगले अंक में हम शिकार के रोटी के लिए उल्लेखनीय बनने के महत्व पर चर्चा करेंगे।

[जारी]

—ओ

—x—

(पहले पेज से क्रमशः ....)

इराक सरकार करती है। इस प्रकार अमरीका के हित, इराक के हित, रूस के हित भारत के हित का मतलब है पूंजी के अमरीकी धड़े के हित, पूंजी के इराकी धड़े के हित, पूंजी के रूसी धड़े के हित, पूंजी के भारतीय धड़े के हित। और यह सब हित अमरीका-इराक-रूस-भारत के मजदूरों के हितों के खिलाफ हैं। देशभक्ति वाली पूंजीवादी अफीम है जिसके जरिए पूंजी के नुमाइन्दे दुनिया-भर में मजदूरों को एक-दूसरे के गले काटने को तैयार करते हैं। जाहिर है कि देशभक्ति वाली पूंजीवादी अफीम की काट अमरीका-इराक-रूस-भारत के मजदूरों, दुनिया के मजदूरों की एकता और पूंजीवाद के खिलाफ उनका संघर्ष है।

—देशों की स्वतन्त्रता की वकालत वास्तव में देशों के रूप में गठित विश्व पूंजी के धड़ों की स्वतन्त्रता की दलील है। वैसे, शक्तिशाली पूंजीवादी धड़े इस दलील को सहूलियत के हिसाब से ही याद करते व भुलाते हैं। मजदूरों का काम देशों को बनाये रखना नहीं है बल्कि सब देशों को तोड़कर विश्व मानव समुदाय का निर्माण करना है। जाहिर है कि देशों की एकता-अखन्डता—स्वतन्त्रता को दफनाना अमरीका-इराक-कुवैत भारत के मजदूरों, दुनिया-भर के मजदूरों का काम है।

—दासों और भूदासों के खिलाफ स्वामियों और सामन्तों के हथियार रहे धर्म का इस्तेमाल पूंजी के नुमाइन्दे भी मजदूरों के खिलाफ करते हैं। आज खास करके पूंजी के कमजोर धड़े धर्म युद्ध—जेहाद के नारे लगा कर मजदूरों को बलि के बकरे बनाने की कोशिश करते हैं। हकीकत यह है कि हिन्दू धर्म का शंख बजाने वाले पूंजी के नुमाइन्दे हिन्दू धर्म के चक्कर में पड़े मजदूरों का शोषण करते हैं, इस्लाम का ढोल पीटने वाले पूंजी के नुमाइन्दे अल्लाह के चक्कर में पड़े मजदूरों का शोषण करते हैं, ईसा मसीह के गीत गाने वाले पूंजी के नुमाइन्दे प्रभु ईसु के चक्कर में पड़े मजदूरों का शोषण करते हैं। जाहिर है कि पूंजीवादी दमन-शोषण के खिलाफ संघर्ष की राह पर तेजी से आगे बढ़ने के लिए मजदूरों को मसीहा-महदी-अवतार की अफीम से पिन्ड छुड़ाना जरूरी है।

—कुवैत में अमरीकी सरकार के पिट्ठू शासक की सत्ता फिर स्थापित करने अथवा राजीव गांधी के दोस्त यासर अराफात के लिये फिलिस्तीन की गद्दी का निर्माण करने से मजदूरों का कोई लेना-देना नहीं है।

मजदूर वर्ग की पूंजीवादी युद्ध के खिलाफ क्रान्तिकारी नीति गृह युद्ध की नीति है जोकि प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) के समय तय हुई थी। पूंजीवादी गिरोहों के बीच युद्ध के समय मजदूरों को वेतन-वर्किंग कन्डीशनों की अपनी डिमान्डों पर संघर्ष तेज करते हुये पूंजीवादी मार-काट के खिलाफ बगावत की तैयारी करनी चाहिए। सिपाहियों की वर्दी पहना कर मौत के मुंह में धकेले जा रहे मजदूरों को अपने-अपने राष्ट्रपतियों—प्रधानमन्त्रियों—जनरलों को अपने हथियारों का निशाना बनाना चाहिए।

पूंजीवादी युद्ध मुर्दाबाद! पूंजीवाद मुर्दाबाद!
अमरीका सरकार मुर्दाबाद! इराक सरकार मुर्दाबाद!

इराक-कुवैत-इस्राइल-अमरीका के मजदूरों की एकता की राह मजदूरों की राह है।

यह ध्यान में रखने की जरूरत है कि पूंजीवादी व्यवस्था के बढ़ते संकट का नतीजा पूंजीवादी गिरोहों की आपसी युद्धों की तैयारियों का तेज होना ही नहीं है बल्कि दुनिया-भर में क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन के विकास के लिए सचेत प्रयासों का तेज होना भी है। पूंजीवादी व्यवस्था के बढ़ते संकट की वजह से हर देश में बढ़ रहा असन्तोष पूंजीवादी-निम्न पूंजीवादी-पूर्व पूंजीवादी धाराओं के द्वारा ही नहीं बल्कि मजदूर पक्ष के उभरने की दिशा में भी स्वयं को अभिव्यक्त कर रहा है। पूंजीवाद के खिलाफ मजदूर पक्ष—क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन—असली कम्युनिस्ट आन्दोलन का विकास ही जीवन, बेहतर जीवन के लिए मानव की राह है।

—0—

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अलकनन्दा प्रिंटिंग प्रेस C-III/206, सं. गाँ. मेमो. न. से मुद्रित